

“ग्रामीण महिलाओं की प्रस्थिति पर संचार माध्यमों का प्रभाव”

(रीवा जिले के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. मोहम्मद परवेज

(अतिथि विद्वान् समाजशास्त्र)

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, (म.प्र.)

सारांश: इकीसर्वों शताब्दी के आरम्भ में जब संचार का विस्तृत विस्तार हुआ जिससे महिलाओं में जागरूकता बढ़ने लगी तो वे सशक्त होने लगी। संचार माध्यमों ने महिलाओं को उनके अधिकार दिलाने एवं उनको सशक्त बनाने में महत्वूर्ण भूमिका निभा रहा है। ग्रामीण महिलाओं की प्रस्थिति में बदलाव लाने में संचार माध्यमों का बहुत बड़ा योगदान है। संचार माध्यम ने आज पुरे विश्व को बदल दिया है, इसी क्रम में ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाली महिलाओं के प्रति मानक मूल्यों में भी परिवर्तन आया है, जिन्हें कल तक केवल उपभोग की वस्तु माना जाता था आज वही महिलायें जागरूक होकर अपने अधिकारों की माँग कर रही हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रामीण महिलाओं की वर्तमान प्रस्थिति का आकलन करने के साथ महिलाओं के सशक्तिकरण में संचार माध्यमों की भूमिका का सर्वेक्षण करना तथा ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक व मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण सम्बन्धी तथ्यों को जानने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द: महिला, प्रस्थिति, संचार, ग्रामीण, भूमिका, अधिकार

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

- [1]. लवानिया, एम०एम०, भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर,
- [2]. चोपड़ा, लक्ष्मेंद्र : जनसंचार का समाजशास्त्र, आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा), 2002,
- [3]. हीगल, डॉ आशा, जैन, डॉ मधु, पारीक, डॉ शुशीला : संचार के सिद्धान्त, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2009,
- [4]. अरुण, डॉ एस०के० एवं त्यागी डॉ बी०डी० : जनसंचार एवं कृषि पत्रकारिता, रामा पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, 2014,
- [5]. उपाध्याय, डॉ अनिल कुमार : पत्रकारिता एवं विकास संचार, विजय प्रकाशन मंदिर 2001,
- [6]. आर्य डॉ नरेन्द्र कुमार, मीडिया विमर्श, वर्ष 7, अंक 28, जुलाई-सितम्बर 2013,
- [7]. यादव, राम गणेश : भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं विकास, ओरिएंट ब्लैक्स्वान, नई दिल्ली,
- [8]. सेतिया, सुभाष : गाँवों में सूचना टेक्नोलॉजी का प्रभाव, कुरुक्षेत्र, जनवरी 2012,

- [9]. जोशी, हेमंत : सामाजिक बदलाव में रेडियो, मोबाइल इण्टरनेट, कुरुक्षेत्र, दिसम्बर 2011